Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 3 | SPECIAL ISSUE MARCH-2023

मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में स्त्री–विमर्श

डॉ. अनिता कुमावत | प्राचार्या, श्री महावीर शिक्षण संस्थान रेनवाल, जयपुर

ABSTRACT:

KEYWORDS:

नई सदी के आगमन के साथ ही कई विमर्शो का साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण हुआ। इन विमर्शो में मिड़िया विमर्श, आदिवासी विमर्श, दलित विमर्श– जैसे विमर्शों के अतिरिक्त स्त्री–विमर्श प्रमुख है। अस्सी के दशक के आस–पास से ही साहित्य में स्त्री–विमर्श की आहट सुनाई देने लगी थी। भूमण्डलीकरण और बाजारावादी संस्कृति के युग में आत्मसजगता और आत्म चेतना के परिणामस्वरूप स्त्री–विमर्श को पंख मिले। परिणामतः स्त्री की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं शैक्षिक स्थिती–परिस्थिति में अनेक प्रकार के परिवर्तन एवं सुधार हुए वर्तमान समय में स्त्री विमर्श आज ऊँचाइयों को छू रहा है। यह एक ऐसा विमर्श अर्थात नारीवादी आन्दोलन है, जो स्त्री द्वारा स्त्रो के लिए चलाया गया। स्त्री विमर्श का मूल अभिप्राय है – ''स्त्री को सभी प्रकार शोषण से मुक्ति प्रदान करना। स्त्री विमर्श के चलते स्त्री ने अपने अस्तित्व को जाना समझा, और पहचाना। पुरूष सत्तात्मक समाज में उसने स्त्री सम्बन्धी समस्त पुराने मिथकों को तोड़कर जब अपने आप का एक नई भूमिका के रूप में प्रस्तुत किया तो जन्म हुआ स्त्री विमर्श का। हिन्दी साहित्य में क्षेत्र में स्त्री विमर्श के क्षेत्र में समकालीन महिला लेखिकाओं ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से स्त्री के मानवीय अधिकारों और अस्मिता से जुड़े महत्वपूर्ण सवालों को उठाया। स्त्री लेखन और स्त्री विमर्श के सम्बन्ध में वर्जीनिमा ''''''' के ये शब्द सार्थक प्रतीत होते है कि –''स्त्री का लेखन स्त्री का होता है, स्त्रीवादी होने से वह बच नहीं सकता अपने सर्वोत्तम रूप में वह स्त्रीवादी ही होगा।''1

स्त्री विमर्श अर्थात नारी मुक्ति की इस लड़ाई में महिला लेखिकाओं की अहं भूमिका रही है।2 जिन्होंने पिछले दशकों से चली आ रही अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी, आँच में दूध आँखों में है पानी के स्त्री सम्बंधी अवधारणा को ठुकरा कर अपने साहित्य के माध्यम से नारी को अबला से सबला रूप में प्रस्तुत किया। स्त्री विमर्श के क्षेत्र में जिन महिला लेखिकाओं ने अपनी पहचान बनाई उनमें मन्नू भण्डारी, प्रभा खेतान, ममता कालिया शशिप्रभा शास्त्री, उषा–प्रियम्वदा, शिवानी, अलका सरागवी, नासिरा शर्मा, नमिता सिंह, सूर्यवाला, कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा एवं निकिता गर्ग आदि का विशीष्ट स्थान रहा हैं। इन महिला लेखिकाओं में न केवल बदलते समय सन्दर्भो में स्त्री को साहित्य के प्रस्तुत किया अपितु उनमें नारी चेतना जगाने का कार्य भी किया। इनका कथा साहित्य चाहे वह उपन्यास हो या कहानियां स्त्री संघर्ष एवं उसकी पीड़ा। स्त्री के बनने–बिगड़ने को दर्द को व्यक्त करती है जा स्त्री विमर्श का जीवन्त दस्तावेज कहे जा सकते है। स्त्री–विमर्श के क्षेत्र में छठे दशक के पश्चात् जिन महिला लेखिकाओं ने स्त्री विमर्श को एक नवीन दिशा और दशा प्रदान की उनमें मन्नू भण्डारी का अहं स्थान है। मन्नू भण्डारी ने अपने कथा साहित्य (कहानियाँ एवं उपन्यासों) में स्त्री के प्रति समाज की परम्परागत रूढ़िवादी सोच को चुनौती देते हुए पूरे साहस के साथ अपनी बात कही है।

स्त्री–विमर्श के परिचय के पश्चात मन्नू भण्डारी के इस मनु भण्डारी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श मेरे आलेख का मूल विषय है। इस सन्दर्भ में मैने विचारों का इस सारांश में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हिन्दी कथा साहित्य में मन्नू भण्डारी का विशिष्ट स्थान है, यह एक ऐसी महिला लेखिका है जो समय की प्रामाणिकता के साथ निरन्तर साहित्य सृजन में रत रही है। लेखकीय संस्कार उन्हें पैतृक परम्परा के रूप में प्राप्त है। मन्नू भण्डारी ने सभी विधाओं के अतिरिक्त उपन्यास साहित्य के क्षेत्र में चार उपन्यासों की रचना की। इसका 'आपका बंटी', 'महाभोज', 'स्वामी' एवं 'एक–इंच मुस्कान' वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पति पत्नि सम्बंधी, स्त्री की मनः स्थितियों, उसके आक्रोश एवं संवेदनाओं को पूरी तरह से अपने म समाहित कर स्त्री–विमर्श के सन्दर्भ में प्रस्तुत करने के साक्ष्य है। जिस प्रकार सूर्य की प्रातःकालीन किरणे रात्रि के अंधकार को चीर कर चारों तरफ उजाला फैला देती है ठीक उसी तरह इन्होंने अपने नारी जीवन की विसंगतियों और विड़म्बनाओं के बारीक से बारीक रेशे को अपन उपन्यासों में उकेरा। स्त्रीमिर्श सभी पक्षों की कुशल चित्रकार रही मन्नू भण्डारी ने अपने लेखन के माध्यम से स्त्री को एक नवीन दशा और दिशा प्रदान की। पुरूष वर्चस्वादी समाज में स्त्री को सामाजिक, धार्मिक कुरीतियों एवं कुप्रआथों विरूद्ध विद्रोह करने का आत्मबल प्रदान किया। समाज में स्त्री जीवन का आर्थिक पक्ष हो चाहे सामाजिक या शैक्षिक कोई भी पक्ष इनकी सूक्ष्म दृष्टि से ओझल नहीं हुआ है। मन्नू भण्डारी ने अपने आस–पास के परिवेश में घटित घटनाओं को अपने उपन्यासों का कथ्य बनाया उनके उपन्यासों के पात्र भी आस पास के परिवेश से सम्बंध रखते है, यही से इसके कथा लेखन का प्रारम्भ होता है, इस सम्बन्ध में विजय लक्ष्मी पूनियां से अपने एक लेख में लिखा है कि –''समाज की हर छोटी–बड़ी घटना मन्नू जी के मन को प्रभावित करती है। ये ही घटनाएँ उनकी उपन्यास हो या कहानी के लिए मूल बिदुं है अथवा यही भी कहा जा सकता है कि ये स्टर्टिंग प्वाइंट का भी काम करती है।''2

सन् 1950 में देश की आजादी के उपरान्त सामाजिक परिवेश एवं सम्बन्धों में व्यापक स्तर पर बदलाव आया। जिससे स्त्री के प्रति साहित्यकारों के दृष्टिकोण में भी गुणात्मक परिवर्तन हुए। मन्नू भण्डारी ने इसे बदलते परिवेश में नारी के व्यक्तित्व और उससे जुड़ी अवधाराओं को अपने उपयोग में प्रस्तुत किया है। वर्तमान भूमण्डलीकरण के युग में नारी ने सामाजिक आदर्शो और नैतिक मूल्यों को ठुकरा कर आधुनिकता का दामन थामा। शिक्षित होकर वह आत्मनिर्भर बनी और इसी आत्मनिर्भरता ने उसमें आत्मस्वाभिमान एवं आत्मस्वलम्बन को जगाया। समय की वेगवती धारा ने नारी की मानसिकता ने भी परिवर्तन किया, जिससे उसके विचार क्षेत्र का विस्तार हुआ। परिणामतः वह अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति सजग हो सकी। वर्तमान में नारी–स्त्री क्षेत्रा में पुरूष वर्चस्व को चुनौती दे रही है। पुरूष पराधीनता की सभी वेदियों को तोड़कर वह नवीन जीवन मूल्यों को अपना रही है। शिक्षित हो पूरे आत्मबल और आत्मसम्मान के साथ अपनी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने के लिए संघर्षरत है।

मन्नू भण्डारी का 'आपका बंटी' इनका एक बहुचर्चित और महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास की नायिका 'सशुन' है। वह पढ़ी–लिखी शिक्षित नारी है, किन्तु परिस्थितियों वश उसका पति से तलाक हो जाता है। आधुनिक विचारधारा वाली शकुन व्यवहारिक जीवन में तो इसे स्वीकार कर लेती है किन्तु मानसिक रूप से से वह इसस्थिति को स्वीकार नहीं कर पाती है। टूटन की इस पीड़ा और परम्परागत सम्बन्धों के साथ–साथ आधुनिक बोध के अर्द्धद्वदों के बीच में वह झूलती रहती है। पती–पत्नी के सम्बन्धों के टूटने का दर्द जो सबसे अधिक भोगते है वह है बच्चे जिन्हें तिसरे आयाम भी कहा जाता है। तलाक के बाद भारतीय समाज में नारी की क्या स्थिति हो जाती है, उसे शगुन जैसी स्त्री पात्र के माध्यम से अच्छी तरह से समझा जा सकता है। उसे समाज में इस नजर से देखा जाता था कि मानों वह कसूरवार है परम्परा में उसे जीने का हक नहीं है ? उसे की पुरूष की तरह दूसरे विवाह (पुनर्विवाह) की मान्यता समाज को देनी चाहिए। जिससे वह भी अपना भरण–पोषण कर सके और नहीं तो उसके पुनर्विवाह पर इतना वबाल और विरोध क्यों?''3 तलाक के बाद स्त्री की सामाजिक स्थिति और सम्बन्धों के टूटने का यथार्थ दर्द मन्नू भण्डारी ने 'आपका बंटी' उपन्यास में बंया किया है। इन्होंने भारतीय समाज में पुनर्विवाह को मान्यता प्रदान करने, तलाक शुदा स्त्री भरण–पोषण, बच्चों के लालन–पालन की जो आवाज उठाई है, वह एक प्रकार से स्त्री–विमर्श का ही गूंज है।

मन्नू भण्डारी का 'स्वामी' उपन्यास की केन्द्रीय पात्र भी स्त्री मिनो है जिसके माध्यम से लेखिका ने राजनीतिक एवं सामाजिक परिवर्तनों के प्रति उसकी सजगता को उजागर

किया है। मिनी शिक्षित है, विवेकशील है, वह अपना अच्छा–बुरा अच्छी तरह से जानती है। उसके जीवन का एक लक्ष्य है, जिस तक उसे पहुँचना है। आधुनिक जीवन शैली और परिवेश में पत्नी वही मिनी प्रेम–विवाह की समर्थक है। इस हेतु वह सामाजिक मान्यताओं एवं पारिवारिक मूल्यों से भी टक्कर लेने को तैयार है। युगीन सन्दर्भो में मन्नू जी ने प्रेम–विवाह को मान्यता देकर जो कदम मिनी द्वारा उठाया गया है, उसका समर्थन कर स्त्री विमर्श को नई दिशा दी है। भारतीय समाज में सन् 1960–70 के दशक तक नारी शिक्षा न के बराबर थी। समय की आवश्यकता को समझते हुए मन्नु भण्डारी ने अपने उपन्यासों की रचना की। इनके स्त्री पात्र न केवल शिक्षित है, अपितु उच्च शिक्षा प्राप्त होने से उच्च पदों पर भी आसीन है। चाहे वह इनके स्वामी की सौदागिनी हो या 'एक इंच मुस्कान' की रचना या फिर 'आपका बंटी' उपन्यास की शगुन। उपन्यासों के सभी स्त्री प्राप्त शिक्षित होने से रूढ़ एवं जर्जर सामाजिक मान्यताओं को चुनौति देते है। मन्नू भण्डारी का मानना है कि स्त्री के व्यक्तित्व के विकास के लिए उसका शिक्षित होना आवश्यक है। शिक्षित होने के कारण ही इनके उपन्यासों के स्त्री पात्र राजनीतिक आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों ने अपनी पहचान दर्ज करवाने में सफल हो सके है। शिक्षित नारी आर्थिक रूप से भी आत्मनिर्भर होती है और यही आत्मनिर्भरता उसके पुरूष पराधीनता एवं सामाजिक बन्धनों से मुक्ति दिलाती है। शिक्षा से नौकरी प्राप्त कर आर्थिक रूप से निर्भर एक इंच का मुस्कान की नायिका शकुना सम्बन्ध में लेखिका ने लिखा है कि–'' एक इंच मुस्कान की शगुन सा,रे,गा,मा,पा,धि,नि,सा का बेसुरा गीत गाती थी, वहीं शादी के बाद पति द्वारा घर से निकाल दिये जाने पर आज गर्व से कहती है कि ''दिल्ली में रहती हूँ, इधर पास ही स्कूल है अपना संगीत का।''4 शगुन का यह कथन स्त्री–विमर्श को अर्न्तजातियां सशक्त ढंग से व्यक्त करता है। इनके उपन्यासों के पात्र न केवल अपनी आजादी के प्रति सजग है, अपितु वह तो पुर्नविवाह, प्रमविवाह और समाज में क्रातिकारी परिवर्तन भी ला रहे है। सौदामिनी, रजंना, शगुन आदि जैसे स्त्री पात्र अपने भविष्य के सम्बन्ध में निर्णय लेने में पूर्णत सक्षम है।

इनके उपन्यासों के नारी चरित्र केवल पीड़ा की चोट से कराहते हुए अपने आपके तन ही अपने को सीमित नहीं रखते अपितु उसके विरूद्ध लड़ाई लड़ने और जीवन जीने का प्रयास भी करते है। उपन्यासों में स्त्री चरित्र दबी एवं शोषित रहकर जीना नहीं चाहती वह अपने आप सम्मान के लिए संघर्ष करती है। स्त्री चरित्रों की यही लाचारी और मुक्ति की कामना हेतु संघर्ष स्त्री की नवीन मानसिकता को उजागर करता है, जिससे स्त्री ने पुरूषों द्वारा स्त्री के प्रति बनाई गई समस्त परम्परागत स्त्री छति को छोड़कर अपने आप को नई छवि को उजागर किया है। इनके स्त्री चरित्र अपने असतित्व के लिए लड़ाई लडते है, पुरानी जर्जर मान्यताएं एवं रूढ़ियां को तोड़कर आवाज उठाने का साहस भी रखते है। अतः सार रूप में कहा जा सकता है कि मन्नू भण्डारी ने अपने उपन्यासों में शगुन, सौदामिनी एवं रजंना जैसे स्त्री चरित्रों के माध्यम से स्त्री–विमर्श में सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक चिन्तन की पृष्ठभूमि प्रस्तुत की है, जो अपने आप एक में उन विमर्श है। अपनी उपन्यासों ने स्त्री असित्व से जुड़े जिन प्रश्नों से हमें अवगत कराया है वह आधुनिक भारतीय समाज और उसके संकटों से जडे है। इनकी उपन्यासों की स्त्री बदलते समय की ठोस एव ं वास्तविक स्त्री है। उसकी आत्मनिर्भरता, आत्मसजगता, मुक्ति प्राप्ती हेतु आत्मसंघर्ष एवं जीवन संघर्ष स जटिलताओं को इन्होंने अपने उपन्यासों में उजागर किया है। यह एक युग सत्य है जो आने वाले समय में स्त्री–विमर्श समाज का मुख्यधार अवश्य बन सकता है।

REFERENCES

1. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ 493
2. यशोधरा खण्डकाव्य : मैथिलीशरण गुप्त, झाँसी प्रकाश, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ 40
3. मधुमती हिन्दी मासिक प्रकाश–स्थान, उदयपुर, पृष्ठ 25
4. एक इंच मुस्कान मन्नू भण्डारी : राजपाल एंड संस दिल्ली, 1955
5. आपका बंटी – मन्नू भण्डारी : अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, 1977
6. स्वामी – मन्नू भण्डारी पेपर बैन, नोएड़ा 1979